बुद्धिनाथ मिश्र

बुद्धिनाथ मिश्र मैथिलीक नवगीतकार छथि। मैथिलीमे गीत रचना बड़ पुरान अछि। मुदा नवगीत हाल-सालक काव्य-विधा थिक। जीवन आ जगतकेँ आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे देखब आ राखब एकर मुख्य विशेषता अछि। विषये नहि, शिल्प आ भाषा सेहो नवीन अछि। बुद्धिनाथ मिश्र मैथिलीक नवगीतकारमे अग्रगण्य छथि। हिनक जन्म मई, 1949मे भेलनि। समस्तीपुर जिलाक देवधा गाम हिनक जन्म स्थान छनि। हिनक प्रारंभिक शिक्षा वाराणसीमे संस्कृत शिक्षा- पद्धतिसँ भेलनि, मुदा ई. एम. ए. कयलनि अंग्रेजी आ हिन्दीमे। 'यर्थाथवाद और हिन्दी नवगीत' पर हिनका पीएच.डी.क उपाधि भेटलनि। लगभग गत चालीस वर्षसँ ई मैथिली आ हिन्दीमे निरन्तर लिखि रहलाह अछि। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित छनि, मुदा मैथिलीमे प्रकाशनाधीने छनि। मैथिली हिन्दी साहित्यकारक रूपमे विश्वक अनेक देशक भ्रमण कयने छथि। सम्प्रति ओएनजीसीक मुख्यालयमे मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) पद पर कार्यरत छथि।

काव्य सन्दर्भ 'भाषा' - पत्रिकासँ संकलित 'रौदी अछि' मूलत: चेतना-गीत अछि। एकर उद्देश्य छैक जनतामे जागरण आनब, ओकरा सक्रिय करब। मिथिलामे बाढ़ि अबैत अछि, रौदी होइत अछि, नाना प्रकारक विपत्ति पड़ैत अछि, मुदा एहिठामक लोक ओकरा लिखलाहा मानि कऽ बैसल रहैत अछि। एतबे नहि, अपन अतीत के दोहाइ दैत रहब, हमरा सभक आदति भऽ गेल अछि। गीतकार एही स्वभाव पर प्रहार करैत क्रियाशील होयबाक बात कहैत छथि। कोढ़ि नहि बनी, दुराचारक विरोध करी -आइ मिथिलामे कि सौंसे देशमे एकरे आवश्यकता अछि।

रौदी अछि

रौदी अछि, दाही अछि
हमरा ले' धैन सन।
गामक तबाही अछि
हमरा ले' धैन सन।।
हम महान छी, चटइत
तरबा इतिहास अछि
विपदेसँ गढ़ल हमर
व्यक्तिगत विकास अछि
पुस्त-पुस्तसँ सूर्यक रथ जोतल लोकपर
पड़इत अछाँही अछि
हमरा ले' धैन सन।
हम देशक कर्णधार
हमरहिसँ देस अछि
भासनमे हम, रनमे
राजा सलहेस अछि
सरनागत- पालक हम, तेँ चारू सीमापर
ई आवाजाही अछि
हमरा ले' धैन सन।
अहाँ धरापुत्र, धरापर
अहींक घाम खसय

शीत-तापहीन हमर

परिवारक राज रहय

न्याय वैह जे हमरा प्रिय, हमरे हितमे हो

सत्यक गवाही अछि

हमरा ले' धैन सन।

शब्दार्थ

धैन सन	:	निफिक्र, बेपरबाह
विपदा	:	विपत्ति, संकट
सरनागत	:	शरणमे आयल
पालक	:	पालन करयबाला
पुस्त	:	कुल, वंश
अछाही	:	अछाह, छाया

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) बुद्धिनाथ मिश्रक रचना छनि

(क) वन्दना (ख) रौदी अछि

(ग) शिवगीत (घ) हाथ

(ii) 'रौदी अछि' शीर्षक कविताक रचयिता छथि

(क) बुद्धिनाथ मिश्र (ख) सुकान्त सोम

(ग) उदयचन्द्र झा 'विनोद' (घ) विद्यानाथ झा 'विदित'

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) हमरा ले' ..... सन

(ii) हम देसक .....

(iii) न्याय वैह जे हमरा ..... , हमरे हित हो।

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) रौदीक रचनाकार के छथि ?

(ii) 'धैन-सन' शब्दक अर्थ लिखू।

(iii) पठित पाठमे केहन न्यायक चर्चा कयल गेल अछि।

(iv) 'रौदी-दाही' सँ कविक की तात्पर्य अछि ।

(v) हम महान छी कोन अर्थमे कहल गेल अछि।

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'रौदी-अछि' कविताक सारांश लिखू।

(ii) पठित पाठसँ की प्रेरणा भेटैत अछि ?

(iii) 'रौदी-अछि' कवितामे कवि आमलोककेँ कर्त्तव्य-बोध करबैत छथि-कोना ?

(iv) रौदी आ दाहीसँ गाम तबाह अछि एहि पर निबन्ध लिखू।

5. निम्न पाँती सभक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) रौदी अछि, दाही अछि
हमरा ले' धैन सन
गामक तबाही अछि
हमरा ले' धैन सन

(ii) न्याय वैह जे हमरा प्रिय, हमरे हितमे हो
सत्यक गवाही अछि
हमरा ले' धैन सन।

गतिविधि -

1. 'रौदी आ दाही' सँ सम्बन्धित आओर कोनो कविता लिखू।

2. निम्नलिखित पाँती सभक अर्थ स्पष्ट करू:
सरनागत- पालक हम, तेँ चारू सीमापर
ई आवाजाही अछि
हमरा ले' धैन सन

3. सूर्यक कोनो दूटा पर्यायवाची शब्द लिखू।
4. एहि कविताकेँ कंठस्थ करैत सस्वर पाठ करू।

निर्देश-

1. शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ रौदी आ दाहीक विशेषार्थसँ परिचित करांबथि।
2. लोकक कथनी आ करनीक सम्बन्धमे व्यक्त भेल विचारसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
3. एहि व्यंग्य कविताक प्रेरक भावकेँ स्पष्ट करैत छात्रक बीच विचार विमर्श कार्यक्रम कयल जाय।